ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

# प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति और 21वीं सदी की शिक्षण रणनीतियाँ :मूल्य, उद्देश्य और व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन

शीला, शोधकर्ता, इतिहास विभाग, एनआईआईएलएम विश्वविद्यालय, कैथल (हरियाणा)
प्रो. (डॉ.) दलजीत सिंह बिसला, इतिहास विभाग, एनआईआईएलएम विश्वविद्यालय, कैथल (हरियाणा)

**सार**

यह शोध-पत्र प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति और 21वीं सदी की शिक्षण रणनीतियों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य दोनों प्रणालियों के मूल्यों, उद्देश्यों तथा व्यवहारिक आयामों का विश्लेषण करना है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली, विशेषतः गुरुकुल परंपरा, चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन, आध्यात्मिक उन्नति तथा समग्र विकास पर केंद्रित थी। इसके विपरीत 21वीं सदी की शिक्षा प्रणाली कौशल-आधारित अधिगम, तकनीकी दक्षता, नवाचार, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और आजीवन सीखने की अवधारणा पर आधारित है। यह अध्ययन ऐतिहासिक, दार्शनिक और विश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से दोनों प्रणालियों के गुण-दोष, समानताओं तथा अंतरों को स्पष्ट करता है। शोध का निष्कर्ष यह दर्शाता है कि आधुनिक शिक्षा में तकनीकी प्रगति के साथ प्राचीन शिक्षा के नैतिक और मानवीय मूल्यों का समन्वय आवश्यक है, जिससे समग्र और संतुलित शिक्षा व्यवस्था विकसित हो सके।

**कुंजी शब्द: गुरुकुल, आधुनिक शिक्षा, मूल्य-आधारित शिक्षा, कौशल विकास, 21वीं सदी की शिक्षण रणनीतियाँ**

## 1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज और देश की प्रगति का आधार होती है। यह केवल पढ़ाई-लिखाई तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह व्यक्ति के सोचने के तरीके, व्यवहार, नैतिक मूल्यों और जीवन जीने की शैली को भी प्रभावित करती है। भारत की शिक्षा परंपरा बहुत पुरानी और समृद्ध रही है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की शुरुआत वैदिक काल से मानी जाती है। उस समय शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं था, बल्कि अच्छे चरित्र का निर्माण करना, नैतिकता सिखाना और आत्मिक विकास करना भी था। प्राचीन काल में गुरुकुल प्रणाली प्रचलित थी। छात्र गुरु के साथ रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। शिक्षा जीवन से जुड़ी होती थी—धर्म, दर्शन, गणित, आयुर्वेद, खगोलशास्त्र, युद्धकला आदि विषय पढ़ाए जाते थे। साथ ही अनुशासन, सेवा भावना और समाज के प्रति जिम्मेदारी पर विशेष ध्यान दिया जाता था। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य एक आदर्श और संस्कारी व्यक्ति तैयार करना था।

21वीं सदी में शिक्षा प्रणाली में बहुत बदलाव आया है। आज शिक्षा पर तकनीक का बड़ा प्रभाव है। कंप्यूटर, इंटरनेट, स्मार्ट क्लासरूम, ऑनलाइन शिक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने पढ़ाने और सीखने के तरीके को बदल दिया है। अब शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबों का ज्ञान देना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में कौशल विकास, समस्या हल करने की क्षमता, नई सोच, रचनात्मकता और रोजगार से जुड़ी दक्षताओं का विकास करना है। आज की शिक्षा में प्रोजेक्ट वर्क, समूह कार्य, डिजिटल लर्निंग और व्यावहारिक अनुभव को महत्व दिया जाता है। विद्यार्थी को सक्रिय रूप से सीखने के लिए प्रेरित किया जाता है। लेकिन कई बार यह चिंता भी व्यक्त की जाती है कि आधुनिक शिक्षा में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर उतना ध्यान नहीं दिया जाता जितना पहले दिया जाता था।

इसी कारण प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति और 21वीं सदी की शिक्षण रणनीतियों का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है। इससे हमें यह समझने में मदद मिलेगी कि दोनों प्रणालियों की क्या विशेषताएँ हैं, उनकी क्या सीमाएँ हैं, और किस प्रकार हम दोनों की अच्छी बातों को मिलाकर एक संतुलित और प्रभावी शिक्षा प्रणाली विकसित कर सकते हैं।

## 2. अध्ययन के उद्देश्य

1. प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति के मूल्यों और उद्देश्यों का विश्लेषण करना।
2. 21वीं सदी की शिक्षण रणनीतियों के प्रमुख तत्वों का अध्ययन करना।
3. दोनों प्रणालियों के व्यवहारिक स्वरूप की तुलना करना।

## 3. शोध पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है।

- ऐतिहासिक ग्रंथों, शोध लेखों, शिक्षा नीति दस्तावेजों तथा आधुनिक शिक्षण सिद्धांतों का अध्ययन किया गया है।
- तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए दोनों प्रणालियों के विभिन्न आयामों की समीक्षा की गई है।

**4. प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति**

**मूल्य**

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का मूल आधार **मूल्य-आधारित शिक्षा** था। उस समय शिक्षा केवल ज्ञान देने का माध्यम नहीं थी, बल्कि व्यक्ति के अंदर नैतिकता और सद्गुणों का विकास करना उसका प्रमुख उद्देश्य था।

**सत्य, अहिंसा और धर्म:**

विद्यार्थियों को सत्य बोलने, अहिंसा का पालन करने और धर्म के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी जाती थी। "सत्यं वद, धर्मं चर" जैसे उपदेश शिक्षा का मूल मंत्र थे। सत्यनिष्ठा को जीवन की सबसे बड़ी शक्ति माना जाता था।

**आत्मानुशासन और संयम:**

विद्यार्थियों को सादा जीवन और उच्च विचार अपनाने की प्रेरणा दी जाती थी। भोजन, वाणी और व्यवहार में संयम रखना सिखाया जाता था। ब्रह्मचर्य का पालन भी शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा था, जिससे एकाग्रता और मानसिक शक्ति बढ़ती थी।

**गुरु-शिष्य परंपरा का सम्मान:**

गुरु को ज्ञान का स्रोत और मार्गदर्शक माना जाता था। गुरु और शिष्य के बीच केवल औपचारिक संबंध नहीं, बल्कि पारिवारिक और आत्मीय संबंध होता था। गुरु का सम्मान करना और उनकी आज्ञा का पालन करना शिक्षा का अनिवार्य भाग था।

**समग्र विकास:**

प्राचीन शिक्षा प्रणाली में केवल बौद्धिक विकास पर ही नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास पर भी समान रूप से ध्यान दिया जाता था। योग, ध्यान, व्यायाम, शास्त्र अध्ययन और प्रकृति के साथ सामंजस्य को महत्व दिया जाता था।

**4.2 उद्देश्य**

प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति का उद्देश्य केवल विद्वानों का निर्माण करना नहीं था, बल्कि ऐसे आदर्श, नैतिक और जिम्मेदार व्यक्तित्वों का विकास करना था जो समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी सिद्ध हों। उस समय शिक्षा को जीवन का मार्गदर्शन माना जाता था, केवल जीविका का साधन नहीं। इसलिए चरित्र निर्माण को शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य समझा जाता था। ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, सहिष्णुता और सेवा-भाव जैसे गुणों को विकसित करने पर विशेष बल दिया जाता था। तैत्तिरीय उपनिषद में गुरु द्वारा शिष्य को दिया गया उपदेश—"सत्यं वद, धर्मं चर" (अध्याय 1, शिखावली, अनुच्छेद 11)—इस बात को स्पष्ट करता है कि सत्य और धर्म पर आधारित जीवन ही शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य था।

इसके साथ ही नैतिक और आध्यात्मिक विकास को भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया। विद्यार्थियों को केवल बाहरी ज्ञान ही नहीं, बल्कि आत्मा, कर्म और मोक्ष जैसे गहन दार्शनिक सिद्धांतों की समझ दी जाती थी। भगवद्गीता (अध्याय 4, श्लोक 38) में कहा गया है—"न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते", अर्थात् इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र कुछ भी नहीं है। यह ज्ञान केवल सूचना नहीं, बल्कि आत्मबोध और जीवन की सच्चाई को समझने का माध्यम था। इस प्रकार आध्यात्मिक उन्नति को जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य माना जाता था। प्राचीन शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य समाजोपयोगी नागरिकों का निर्माण करना भी था। विद्यार्थी को यह सिखाया जाता था कि वह अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहे। मनुस्मृति (अध्याय 2) में वर्णित है कि शिक्षा व्यक्ति को धर्म, अर्थ और सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध कराती है। इसलिए शिक्षा को व्यक्तिगत सफलता से अधिक सामाजिक समर्पण का माध्यम माना जाता था।

इसके अतिरिक्त आत्मनिर्भरता और जीवन कौशल का विकास भी शिक्षा का आवश्यक अंग था। गुरुकुल में विद्यार्थी अपने दैनिक कार्य स्वयं करते थे—जैसे आश्रम की सफाई, जल लाना, लकड़ी एकत्र करना और भोजन की व्यवस्था करना। इससे उनमें श्रम का सम्मान, अनुशासन और आत्मनिर्भरता का गुण विकसित होता था। जैसा कि स्वामी विवेकानंद ने कहा है, "शिक्षा वह है जो मनुष्य को अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाए" (स्वामी विवेकानंद की संपूर्ण कृतियाँ, खंड. 4, p. 358)। यह कथन

प्राचीन शिक्षा के उद्देश्य को भली-भांति स्पष्ट करता है कि शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति को आत्मबल और नैतिक शक्ति प्रदान करना है।

इस प्रकार प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि चरित्र, नैतिकता, आध्यात्मिकता और आत्मनिर्भरता से युक्त संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करना था।

**4.3 व्यवहार**

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का व्यवहारिक पक्ष अत्यंत जीवन-सापेक्ष, सरल और प्रभावशाली था। उस समय शिक्षा केवल कक्षाओं तक सीमित नहीं थी, बल्कि वह जीवन का ही एक अंग थी। गुरुकुल प्रणाली इसका सबसे महत्वपूर्ण आधार थी। विद्यार्थी गुरु के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। यह एक आवासीय व्यवस्था थी, जहाँ गुरु और शिष्य के बीच केवल शिक्षक–विद्यार्थी का संबंध नहीं, बल्कि पारिवारिक और आध्यात्मिक संबंध भी स्थापित होता था। इस व्यवस्था से अनुशासन, सहयोग और सामूहिक जीवन का अनुभव स्वाभाविक रूप से विकसित होता था। छांदोग्य उपनिषद में श्वेतकेतु और उनके गुरु के संवाद (अध्याय 6) से स्पष्ट होता है कि गुरु शिष्य के जीवन को निकट से समझकर उसका मार्गदर्शन करते थे। इसी संदर्भ में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने लिखा है कि "भारतीय गुरुकुल शिक्षा में शिक्षक और शिष्य का संबंध केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक बंधन पर आधारित था" (भारतीय दर्शन, खंड.I, p. 48)। ज्ञान के प्रसार का मुख्य माध्यम मौखिक परंपरा और संवाद पद्धति थी। वेद, उपनिषद और अन्य ग्रंथों का पाठ, स्मरण और पुनरावृत्ति के माध्यम से अध्ययन कराया जाता था। प्रश्नोत्तर की पद्धति से विद्यार्थियों की जिज्ञासा को प्रोत्साहित किया जाता था। कठोपनिषद में नचिकेता और यमराज का संवाद (अध्याय 1) इस बात का उदाहरण है कि शिक्षा संवाद के माध्यम से गहन चिंतन और आत्मबोध तक पहुँचती थी। मौखिक परंपरा ने स्मरण शक्ति को सुदृढ़ किया और ज्ञान को पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रखा।

प्राचीन शिक्षा में व्यक्तिगत मार्गदर्शन को विशेष महत्व दिया जाता था। गुरु प्रत्येक शिष्य की क्षमता, प्रवृत्ति और रुचि के अनुसार शिक्षा प्रदान करते थे। यह एक प्रकार की वैयक्तिक शिक्षण प्रणाली थी। स्वामी विवेकानंद ने कहा है, "शिक्षा वह प्रक्रिया है जो मनुष्य में पहले से विद्यमान पूर्णता को अभिव्यक्त करती है"। यह कथन इस बात को दर्शाता है कि गुरु शिष्य के भीतर छिपी प्रतिभा को पहचानकर उसका विकास करते थे, न कि केवल एक समान पाठ्यक्रम थोपते थे।

अनुभव आधारित शिक्षा भी प्राचीन शिक्षण पद्धति का महत्वपूर्ण अंग थी। शिक्षा केवल सैद्धांतिक नहीं थी, बल्कि व्यावहारिक जीवन से जुड़ी हुई थी। युद्धकला, कृषि, आयुर्वेद, ज्योतिष, शिल्पकला और विभिन्न कलाओं का अभ्यास कराया जाता था। विद्यार्थी प्रकृति के बीच रहकर जीवन के वास्तविक अनुभव प्राप्त करते थे। आश्रम जीवन में श्रम, साधना और अनुशासन का अभ्यास शिक्षा का हिस्सा था। जैसा कि महाभारत में वर्णित है, अर्जुन ने गुरु द्रोणाचार्य से केवल शस्त्रविद्या ही नहीं, बल्कि एकाग्रता और आत्मसंयम भी सीखा।

इस प्रकार प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति का व्यवहारिक स्वरूप जीवन के साथ गहराई से जुड़ा हुआ था। इसमें शिक्षा, अनुशासन, अनुभव और नैतिक विकास एक-दूसरे के पूरक थे, जिससे विद्यार्थी का समग्र विकास संभव होता था।

**5. 21वीं सदी की शिक्षण रणनीतियाँ**

21वीं सदी की शिक्षण रणनीतियाँ बदलती वैश्विक परिस्थितियों और तकनीकी प्रगति के अनुरूप विकसित हुई हैं। आज शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में ऐसे मूल्य और कौशल विकसित करना है जो उन्हें तेजी से बदलती दुनिया में सफल बना सकें। आधुनिक शिक्षा नवाचार और सृजनात्मकता को अत्यंत महत्व देती है। विद्यार्थियों को केवल पाठ याद करने के लिए नहीं, बल्कि नए विचार उत्पन्न करने, समस्याओं का समाधान खोजने और रचनात्मक ढंग से सोचने के लिए प्रेरित किया जाता है। प्रोजेक्ट-आधारित शिक्षण, शोध गतिविधियाँ, डिज़ाइन थिंकिंग और उद्यमिता जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को कल्पनाशील और आत्मविश्वासी बनाती हैं। इसी के साथ वैश्विक नागरिकता भी आधुनिक शिक्षा का एक प्रमुख मूल्य बन गई है। आज का विद्यार्थी केवल अपने स्थानीय समाज तक सीमित नहीं है, बल्कि वह एक वैश्विक समुदाय का हिस्सा है। इसलिए शिक्षा में पर्यावरण संरक्षण, मानवाधिकार, शांति, सामाजिक न्याय और सतत विकास जैसे मुद्दों को शामिल किया जाता

है। विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों का सम्मान करना, विविधता को स्वीकार करना और अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण विकसित करना सिखाया जाता है, ताकि वे एक जिम्मेदार वैश्विक नागरिक बन सकें।

समानता और समावेशन भी 21वीं सदी की शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार है। आधुनिक शिक्षा यह सुनिश्चित करने का प्रयास करती है कि किसी भी विद्यार्थी के साथ लिंग, जाति, आर्थिक स्थिति या शारीरिक क्षमता के आधार पर भेदभाव न हो। समावेशी शिक्षा के माध्यम से विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों को भी समान अवसर प्रदान किए जाते हैं। "सभी के लिए शिक्षा" का सिद्धांत इस युग की शिक्षण नीति का केंद्र बन गया है, जिससे समाज में समानता और सामाजिक न्याय को बढ़ावा मिलता है।

डिजिटल साक्षरता आधुनिक शिक्षा का एक अनिवार्य मूल्य है। तकनीक ने शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया को पूरी तरह बदल दिया है। ऑनलाइन कक्षाएँ, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, स्मार्ट बोर्ड, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल संसाधनों का उपयोग आज सामान्य हो गया है। डिजिटल साक्षरता का अर्थ केवल कंप्यूटर चलाना नहीं, बल्कि सूचना का सही विश्लेषण करना, ऑनलाइन सुरक्षा बनाए रखना और तकनीक का जिम्मेदारी से उपयोग करना भी है।

इस प्रकार 21वीं सदी की शिक्षण रणनीतियाँ ऐसे मूल्यों पर आधारित हैं जो विद्यार्थियों को केवल परीक्षा के लिए नहीं, बल्कि जीवन की वास्तविक चुनौतियों के लिए तैयार करती हैं। यह शिक्षा उन्हें रचनात्मक, जागरूक, जिम्मेदार और तकनीकी रूप से सक्षम नागरिक बनाने की दिशा में कार्य करती है।

**5.2 उद्देश्य**

21वीं सदी की शिक्षा का उद्देश्य केवल शैक्षणिक ज्ञान देना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को व्यावहारिक जीवन के लिए तैयार करना है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली कौशल विकास पर विशेष बल देती है। इसका अर्थ है कि विद्यार्थियों में केवल विषयगत ज्ञान ही नहीं, बल्कि संचार कौशल, नेतृत्व क्षमता, समस्या-समाधान की योग्यता, तकनीकी दक्षता और सहयोगात्मक कार्य करने की क्षमता विकसित की जाए। आज के प्रतिस्पर्धात्मक और तकनीकी युग में केवल डिग्री पर्याप्त नहीं मानी जाती, बल्कि व्यक्ति के कौशल ही उसकी वास्तविक पहचान बनते हैं। इसलिए पाठ्यक्रमों में प्रोजेक्ट कार्य, इंटर्नशिप, प्रयोगात्मक गतिविधियाँ और व्यावहारिक प्रशिक्षण को शामिल किया जा रहा है। रोजगारोन्मुख शिक्षा भी 21वीं सदी की शिक्षण रणनीतियों का प्रमुख उद्देश्य है। शिक्षा का लक्ष्य अब केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाना है। उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यक्रमों को अद्यतन किया जा रहा है, ताकि विद्यार्थी अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद सीधे रोजगार या स्वरोजगार के अवसरों के लिए तैयार हों। व्यावसायिक शिक्षा, स्टार्टअप संस्कृति, डिजिटल कौशल प्रशिक्षण और उद्यमिता को बढ़ावा देकर शिक्षा को जीवन और बाजार की वास्तविक जरूरतों से जोड़ा जा रहा है। आलोचनात्मक चिंतन भी आधुनिक शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। विद्यार्थियों को केवल तथ्यों को स्वीकार करने के बजाय उनका विश्लेषण करने, तर्क करने और सही-गलत का विवेकपूर्ण निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया जाता है। इससे उनमें स्वतंत्र सोच विकसित होती है। आधुनिक कक्षाओं में वाद-विवाद, केस स्टडी, समस्या-आधारित अधिगम और अनुसंधान गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को गहराई से सोचने और अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के अवसर दिए जाते हैं।

इसके साथ ही आजीवन अधिगम का विचार भी शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य बन गया है। 21वीं सदी में ज्ञान और तकनीक तेजी से बदल रहे हैं, इसलिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति जीवनभर सीखने की प्रवृत्ति बनाए रखे। आधुनिक शिक्षा विद्यार्थियों में जिज्ञासा, आत्म-प्रेरणा और निरंतर सीखने की आदत विकसित करती है। ऑनलाइन कोर्स, वेबिनार, डिजिटल संसाधन और खुली शिक्षा प्रणाली इस दिशा में सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

इस प्रकार 21वीं सदी की शिक्षा के उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें कुशल, आत्मनिर्भर, तार्किक और निरंतर सीखने वाले व्यक्तित्व के रूप में विकसित करने के लिए निर्धारित किए गए हैं।

**5.3 व्यवहार**

21वीं सदी की शिक्षण रणनीतियों का व्यवहारिक स्वरूप तकनीक, सहभागिता और नवाचार पर आधारित है। आधुनिक कक्षाओं में स्मार्ट क्लासरूम की व्यवस्था ने पारंपरिक शिक्षण शैली को काफी बदल दिया है। अब केवल ब्लैकबोर्ड और व्याख्यान तक

शिक्षा सीमित नहीं रही, बल्कि डिजिटल बोर्ड, प्रोजेक्टर, मल्टीमीडिया प्रस्तुति, एनिमेशन और वीडियो सामग्री के माध्यम से विषय को अधिक रोचक और स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया जाता है। इससे विद्यार्थियों की समझ बेहतर होती है और वे विषय से अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं। स्मार्ट क्लासरूम शिक्षण को दृश्य, श्रव्य और संवादात्मक बनाते हैं, जिससे जटिल विषय भी सरल हो जाते हैं।

ई-लर्निंग और ऑनलाइन शिक्षा भी 21वीं सदी के व्यवहारिक शिक्षण का महत्वपूर्ण भाग है। इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से विद्यार्थी कहीं भी और कभी भी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। ऑनलाइन कोर्स, वेबिनार, वर्चुअल क्लास और डिजिटल लर्निंग ऐप्स ने शिक्षा को अधिक सुलभ और लचीला बना दिया है। विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा ने यह सिद्ध किया कि तकनीक के माध्यम से शिक्षण-प्रक्रिया को निरंतर बनाए रखा जा सकता है। इससे स्व-अध्ययन की प्रवृत्ति भी बढ़ती है और विद्यार्थी अपनी गति के अनुसार सीख सकते हैं। परियोजना आधारित अधिगम आधुनिक शिक्षण की एक प्रभावी पद्धति है। इसमें विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की समस्याओं पर आधारित परियोजनाएँ दी जाती हैं, जिन पर वे शोध करते हैं, विश्लेषण करते हैं और समाधान प्रस्तुत करते हैं। इससे उनकी रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और टीमवर्क की क्षमता विकसित होती है। यह पद्धति केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं रहती, बल्कि विद्यार्थियों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करती है। वे "करके सीखने" की प्रक्रिया से गुजरते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

इसके साथ ही सहयोगात्मक और सहभागी शिक्षण आधुनिक शिक्षा की प्रमुख विशेषता है। इसमें विद्यार्थी समूह में कार्य करते हैं, विचार-विमर्श करते हैं और एक-दूसरे से सीखते हैं। शिक्षक की भूमिका अब केवल ज्ञान देने वाले की नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और सहयोगी की हो गई है। कक्षा में चर्चा, समूह गतिविधियाँ, प्रस्तुतिकरण और इंटरैक्टिव सत्र विद्यार्थियों को सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करते हैं। इससे सामाजिक कौशल, संवाद क्षमता और सहिष्णुता का विकास होता है।

इस प्रकार 21वीं सदी की शिक्षण रणनीतियों का व्यवहारिक पक्ष तकनीक-सम्मिलित, विद्यार्थी-केंद्रित और सहभागितापूर्ण है, जो शिक्षण को अधिक प्रभावी, रोचक और जीवन से जुड़ा हुआ बनाता है।

**6. तुलनात्मक विश्लेषण**

| आधार | प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली | 21वीं सदी की शिक्षा प्रणाली | विश्लेषण |
|---|---|---|---|
| **मूल लक्ष्य** | चरित्र निर्माण, नैतिकता और आध्यात्मिक उन्नति | कौशल विकास, रोजगार और वैश्विक प्रतिस्पर्धा | प्राचीन शिक्षा व्यक्ति के आंतरिक विकास पर केंद्रित थी, जबकि आधुनिक शिक्षा पेशेवर दक्षता पर अधिक केंद्रित है। |
| **शिक्षण पद्धति** | गुरुशिष्य संवाद-, मौखिक परंपरा, अनुभव आधारित शिक्षा | तकनीक आधारित- अधिगम, स्मार्ट क्लासरूम, ईलर्निंग- | प्राचीन प्रणाली व्यक्तिगत और संवादात्मक थी, जबकि आधुनिक प्रणाली डिजिटल और तकनीकी संसाधनों पर आधारित है। |
| **मूल्य** | सत्य, अहिंसा, धर्म, आत्मसंयम, सेवा भावना | नवाचार, सृजनात्मकता, प्रतिस्पर्धा, वैश्विक नागरिकता | प्राचीन शिक्षा नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित थी, आधुनिक शिक्षा व्यावहारिक और नवोन्मेषी मूल्यों पर आधारित है। |
| **मूल्यांकन प्रणाली** | मौखिक परीक्षा, व्यवहार आधारित आकलन | लिखित परीक्षा, डिजिटल मूल्यांकन, सतत आकलन | प्राचीन मूल्यांकन समझ और आचरण पर आधारित था, आधुनिक मूल्यांकन प्रदर्शन और परिणाम पर आधारित है। |
| **शिक्षक-विद्यार्थी संबंध** | घनिष्ठ, पारिवारिक और व्यक्तिगत मार्गदर्शन | औपचारिक, संस्थागत और संरचित संबंध | प्राचीन प्रणाली में संबंध अधिक आत्मीय थे, आधुनिक प्रणाली में संबंध अधिक पेशेवर और औपचारिक हैं। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| **अधिगम का स्वरूप** | समग्र विकास शारीरिक), मानसिक, आध्यात्मिक( | बहुआयामी विकास तकनीकी), सामाजिक, बौद्धिक( | दोनों प्रणालियाँ विकास पर केंद्रित हैं, परंतु प्राथमिकताएँ अलगअलग हैं।- |
| **सामाजिक दृष्टिकोण** | समाजोपयोगी नागरिक निर्माण | वैश्विक स्तर पर सक्षम नागरिक निर्माण | प्राचीन शिक्षा स्थानीय और सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ी थी, आधुनिक शिक्षा वैश्विक दृष्टिकोण को महत्व देती है। |

स्रोत : अध्ययनकर्ता

सारणी से स्पष्ट होता है कि प्राचीन शिक्षा अधिक मूल्यकेंद्रित और जीवनोन्मुख थी-, जबकि 21वीं सदी की शिक्षा अधिक कौशलआधारित है। दोनों प्-केंद्रित और तकनीक-रणालियों के श्रेष्ठ तत्वों का समन्वय आज की शिक्षा को अधिक संतुलित और प्रभावी बना सकता है।

**7. चर्चा**

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली और 21वीं सदी की शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि दोनों की अपनी-अपनी विशेषताएँ, सीमाएँ और उपयोगिता हैं। प्राचीन शिक्षा प्रणाली का मूल आधार नैतिकता, चरित्र निर्माण और समग्र विकास था। उस समय शिक्षा केवल जीविका अर्जन का माध्यम नहीं थी, बल्कि जीवन को सही दिशा देने का साधन मानी जाती थी। सत्य, अहिंसा, आत्मसंयम, गुरु के प्रति सम्मान और समाज के प्रति कर्तव्यबोध जैसे मूल्यों पर विशेष बल दिया जाता था। विद्यार्थी केवल विषय ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला सीखते थे। इस कारण प्राचीन शिक्षा व्यक्ति के आंतरिक और आध्यात्मिक विकास को प्राथमिकता देती थी।

इसके विपरीत, 21वीं सदी की शिक्षा प्रणाली तकनीकी प्रगति, वैश्वीकरण और डिजिटल क्रांति से प्रभावित है। आज की शिक्षा में कौशल विकास, नवाचार, शोध, प्रतिस्पर्धा और रोजगारोन्मुखता पर अधिक ध्यान दिया जाता है। आधुनिक शिक्षण पद्धतियाँ—जैसे स्मार्ट क्लासरूम, ऑनलाइन शिक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित अधिगम—विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर पर सक्षम बनाने का प्रयास करती हैं। यह प्रणाली विद्यार्थियों को बदलती हुई दुनिया की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करती है। हालाँकि, आधुनिक शिक्षा में कभी-कभी नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की कमी दिखाई देती है। अत्यधिक प्रतिस्पर्धा और परिणाम-केंद्रित दृष्टिकोण के कारण शिक्षा का मानवीय पक्ष कमजोर पड़ सकता है। वहीं प्राचीन शिक्षा में तकनीकी और वैज्ञानिक उन्नति की सीमाएँ थीं, जो आज की जटिल और तकनीकी दुनिया के लिए पर्याप्त नहीं मानी जा सकतीं। इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि दोनों प्रणालियों के श्रेष्ठ तत्वों का समन्वय आवश्यक है। यदि आधुनिक शिक्षा में प्राचीन भारतीय मूल्यों—जैसे नैतिकता, अनुशासन, सहिष्णुता और समग्र विकास—का समावेश किया जाए, तो शिक्षा अधिक संतुलित और प्रभावी बन सकती है। इसी दिशा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारतीय ज्ञान परंपरा, मूल्य-आधारित शिक्षा और समग्र विकास पर बल देती है। यह नीति आधुनिक कौशल और तकनीकी दक्षता के साथ-साथ भारतीय सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों को पुनः स्थापित करने का प्रयास करती है।

आधुनिक शिक्षा में प्राचीन मूल्यों के समावेशन की संभावनाओं का परीक्षण करना आज के समय की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली जहाँ तकनीकी दक्षता, कौशल विकास और प्रतिस्पर्धात्मकता पर केंद्रित है, वहीं उसमें नैतिकता, आत्मअनुशासन, कर्तव्यबोध और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों की अपेक्षाकृत कमी अनुभव की जा रही है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में सत्य, अहिंसा, धर्म, सेवा, संयम और समग्र विकास जैसे मूल्य शिक्षा के केंद्र में थे। इन मूल्यों का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि एक संतुलित, जिम्मेदार और संवेदनशील व्यक्ति का निर्माण करना था। इसलिए आधुनिक शिक्षा में इन मूल्यों के समावेशन की संभावनाओं का अध्ययन करना आवश्यक है, ताकि शिक्षा केवल रोजगारोन्मुख न होकर जीवनोन्मुख भी बन सके। इस परीक्षण के अंतर्गत यह देखा जा सकता है कि विद्यालय और उच्च शिक्षा संस्थानों के पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा, योग, ध्यान, भारतीय ज्ञान परंपरा, जीवन-कौशल और सामुदायिक सेवा को किस प्रकार प्रभावी रूप से जोड़ा जा सकता है। उदाहरण के लिए, परियोजना आधारित अधिगम के साथ सामाजिक सेवा गतिविधियों को जोड़ा जा

सकता है, जिससे विद्यार्थियों में सहानुभूति और सामाजिक चेतना विकसित हो। इसी प्रकार, डिजिटल शिक्षा के साथ आत्मानुशासन और जिम्मेदारी की भावना पर बल दिया जा सकता है, ताकि तकनीक का उपयोग सकारात्मक और रचनात्मक दिशा में हो।

इसके अतिरिक्त, शिक्षक-शिष्य संबंधों में भी प्राचीन गुरु-शिष्य परंपरा की आत्मीयता और मार्गदर्शन की भावना को पुनर्जीवित किया जा सकता है। आधुनिक कक्षाओं में संवाद, चिंतन और मूल्य-आधारित चर्चा को बढ़ावा देकर विद्यार्थियों के नैतिक और भावनात्मक विकास को सुदृढ़ किया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी भारतीय ज्ञान परंपरा और मूल्य-आधारित शिक्षा के समावेशन पर बल देती है, जो इस दिशा में एक सकारात्मक कदम है।

अतः आधुनिक शिक्षा में प्राचीन मूल्यों के समावेशन की संभावनाओं का परीक्षण केवल सैद्धांतिक विचार नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक आवश्यकता है। यह समावेशन शिक्षा को अधिक संतुलित, मानवीय और प्रभावी बना सकता है, जिससे विद्यार्थी तकनीकी रूप से दक्ष होने के साथ-साथ नैतिक रूप से सशक्त और सामाजिक रूप से जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

**8. निष्कर्ष**

प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति और 21वीं सदी की शिक्षण रणनीतियाँ अपने-अपने समय की सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों की उपज हैं। प्राचीन शिक्षा प्रणाली उस युग की आवश्यकताओं के अनुरूप थी, जहाँ समाज का केंद्र बिंदु नैतिकता, आध्यात्मिकता और सामूहिक जीवन था। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के समग्र विकास—शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति—पर आधारित था। उस समय ज्ञान को केवल सूचना के रूप में नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन के रूप में देखा जाता था। चरित्र निर्माण, अनुशासन, आत्मसंयम और समाज के प्रति उत्तरदायित्व को शिक्षा का मूल आधार माना जाता था।

इसके विपरीत, 21वीं सदी की शिक्षा प्रणाली तीव्र तकनीकी विकास, वैश्वीकरण, प्रतिस्पर्धा और ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं से प्रभावित है। आज शिक्षा का केंद्र कौशल विकास, नवाचार, समस्या-समाधान क्षमता, डिजिटल साक्षरता और रोजगारोन्मुखता पर है। आधुनिक शिक्षण पद्धतियाँ विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करती हैं और उन्हें तकनीकी रूप से दक्ष बनाती हैं। यह शिक्षा प्रणाली तेजी से बदलती दुनिया के अनुरूप स्वयं को ढालने की क्षमता विकसित करती है। हालाँकि, दोनों प्रणालियों की तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है कि जहाँ प्राचीन शिक्षा में मूल्य और नैतिकता की गहराई थी, वहीं आधुनिक शिक्षा में तकनीकी प्रगति और व्यावहारिक उपयोगिता अधिक है। यदि शिक्षा केवल कौशल और रोजगार तक सीमित रह जाए, तो उसमें मानवीय संवेदनाएँ और नैतिक दृष्टि कमजोर पड़ सकती हैं। दूसरी ओर, यदि शिक्षा केवल आध्यात्मिक और नैतिक पक्ष तक सीमित रहे, तो वह आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाएगी। इसलिए एक समग्र और संतुलित शिक्षा व्यवस्था के लिए आवश्यक है कि आधुनिक तकनीकी साधनों और शिक्षण रणनीतियों के साथ प्राचीन भारतीय मूल्यों का समन्वय किया जाए। नैतिक शिक्षा, चरित्र निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व को आधुनिक पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जाए, साथ ही विद्यार्थियों को डिजिटल दक्षता, नवाचार और आलोचनात्मक चिंतन से भी सशक्त किया जाए।

अंततः, ऐसी समन्वित शिक्षा प्रणाली ही आदर्श मानी जाएगी जो ज्ञान के साथ संस्कार दे, कौशल के साथ संवेदनशीलता विकसित करे और तकनीकी दक्षता के साथ मानवीय मूल्यों को भी सुदृढ़ बनाए। यही दृष्टिकोण भविष्य की पीढ़ी को संतुलित, जिम्मेदार और वैश्विक स्तर पर सक्षम नागरिक बनाने में सहायक होगा।

**9. सुझाव**

1. शिक्षा पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा और भारतीय ज्ञान परंपरा को शामिल किया जाए।
2. डिजिटल शिक्षा के साथ गुरु-शिष्य संवाद की भावना को बढ़ावा दिया जाए।
3. मूल्य-आधारित एवं कौशल-आधारित शिक्षा का संतुलन स्थापित किया जाए।

**ग्रंथ सूची**

1. भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)*. भारत सरकार.

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

2. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. (1923). *भारतीय दर्शन* (खंड 1). जॉर्ज एलन एण्ड अनविन.
3. विवेकानंद, स्वामी. . *स्वामी विवेकानंद की संपूर्ण कृतियाँ* (खंड 4). अद्वैत आश्रम.
4. कृष्णद्वैपायन वेदव्यास. (. *श्रीमद्भगवद्गीता* (अध्याय 4, श्लोक 38). (मानक/प्रचलित संस्कृत मूल पाठ).
5. (अज्ञात/प्राचीन ऋषि). *तैत्तिरीय उपनिषद* (शिक्षावली, अध्याय 1, अनुच्छेद 11: "सत्यं वद, धर्मं चर"). (मानक/प्रचलित उपनिषद्-पाठ).
6. मनु. *मनुस्मृति* (अध्याय 2). (मानक/प्रचलित स्मृति-पाठ)

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY